कक्षा –10

पाठ –5

पर्वत प्रदेश में पावस –

सुमित्रानन्दन पंत

उद्देश्य–

- विद्यार्थियों में वर्षा ऋतु में पर्वत प्रदेश के सौन्दर्य की अनुभूति कराना।
- प्रकृति के मानवीकरण से परिचय।

प्रस्तुत कविता प्रकृति के रोमांचक सौंदर्य को अपनी आँखों से निरखने की अनुभूति देती है। ऐसा लगता है मानो हम किसी ऐसे रम्य स्थल पर आ पहुँचे हैं;जहाँ पहाडों की अपार पंक्तियाँ हैं, आसपास झरने बह रहे हैं और सब कुछ भूलकर हम उसी में लीन रहना चाहते हैं।

कवि कक्षा में बैठे-बैठे ही पर्वतीय अंचल में विचरण करने की अनुभूति दे जाता है|

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश
पल-पल परिवर्तित प्रकृति वेश।

मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्र दृग-सुमन फ़ाड़,
अवलोक रहा है बार -बार
नीचे जल में निज महाकार

_जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण-सा फ़ैला है विशाल!

गिरि का गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों-से सुन्दर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!

गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

उड़ गया अचानक लो, भूधर
फ़ड़का अपार पारद के पर!
रव-शेष रह गए हैं निर्झर!
है टूट पड़ा भू पर अम्बर!

- धँस गए धरा में सभय शाल!
- उठ रहा धुआँ, जल गया ताल!
- _यों जलद यान में विचर-विचर
- था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

पुनरावलोकन–

वर्षा ऋतु के विभिन्न चित्र–

- तालाब में अपने सौन्दर्य को देखता पर्वत।
- मोती की लड़ियों की तरह प्रतीत होते झरने।
- हवा चलने से हिलते हुए वृक्ष।
- अपने पंखों को फड़फड़ाकर उड़ जाने वाले पक्षी के समान बादल।
- तालाब में आग के भय से छिप गए शाल वृक्ष।

धन्यवाद